हफ़्तावार रिसाला : 393
Weekly Booklet : 393

Faizane Sayyida Fatimatuz Zahra رضی اللہ عنہا (Hindi)

फ़ैज़ाने सय्यिदह फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا

सफ़हात : 23

इन्सानी शक्ल में हूर 05
महब्बत भरा मन्ज़र 14
दुआ क़बूल होती है 07
10 बीबियों की कहानी 23

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡم ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط

फ़ैज़ाने सय्यिदह फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने 10 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो। (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो उस में एक दीनार था ! येह करामत देख कर कई काफ़िर मुसल्मान हो गए। (راحت القلوب، ص142)

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुईं उस की है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

नेकी की दा'वत का अ़ज़ीम जज़्बा

शहज़ादिये कौनैन, वालिदए ह़सनैन, सय्यिदह, त़य्यिबा, त़ाहिरा, आ़बिदा, ज़ाहिदा ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के प्यारे प्यारे बाबाजान, ह़सनैने करीमैन के प्यारे प्यारे नानाजान, मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के हां तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने दरवाज़े पर आप का इस्तिक़्बाल किया और फिर आप को देख कर रोने लगीं। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोने की वज्ह पूछी तो अ़र्ज़ की : मैं आप का रंग बदला हुवा और तक्लीफ़ में देख रही हूं। रह़मते कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे वालिद को एक ऐसे काम के लिये भेजा है कि रूए ज़मीन पर कोई शहरी और दीहाती घर न बचेगा मगर **अल्लाह** पाक तुम्हारे वालिद के ज़रीए़ येह काम (या'नी दीने इस्लाम) इ़ज़्ज़त के साथ पहुंचा देगा, येह दीन वहां तक पहुंच कर रहेगा जहां तक रात की पहुंच है।

(معجم کبیر، 22/225، حدیث:595)

ज़ुल्म कुफ़्फ़ार के हंस के सहते रहे फिर भी हर आन ह़क़ बात कहते रहे
कितनी मेह़नत से की तुम ने तब्लीग़े दीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

(वसाइले बख़्शिश, स. 603, 604)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! हमारे प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दीने इस्लाम का पैग़ाम बे इन्तिहा मशक़्क़त के साथ आ़म फ़रमाया, इस वाक़िए़ में शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मह़ब्बते रसूल में रोने का बयान भी मौजूद है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लाडली और सब से छोटी शहज़ादी हैं। आप की दीगर तीन बहनों के मुबारक नाम येह हैं : ह़ज़रते बीबी ज़ैनब, ह़ज़रते बीबी रुक़य्या और ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ।

विलादत शरीफ़

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का नाम मुबारक "फ़ातिमा" है। इमाम अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ए'लाने नुबुव्वत से 5 साल पहले ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की विलादत शरीफ़ हुई। (شرح الزرقانی علی المواہب، 4/331)

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की जब विलादत शरीफ़ हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के चेह्रए मुबारका के नूर से सारी फ़ज़ा रोशन हो गई। (الروض الفائق، ص274، ملخصًا)

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं, मेरी वालिदा ने फ़रमाया : "كَانَتۡ كَالۡقَمَرِ لَيۡلَةَ الۡبَدۡرِ या'नी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ ह़सीनो जमील थीं।" (مستدرک للحاکم، 4/149، حدیث:4813)

नाम मुबारक की मुनासबत और चन्द मश्हूर अल्क़ाबात

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! फ़ातिमा "फ़तिम" से बना है, जिस का मत़लब है : "दूर होना।" **अल्लाह** पाक ने शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, आप की औलाद और आप के मुह़िब्बीन (या'नी मह़ब्बत करने वालों) को दोज़ख़ की आग से दूर किया है इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का नाम "फ़ातिमा" हुवा।

आप के कई अल्क़ाबात हैं, "बतूल" के मा'ना हैं : मुन्क़त़ेअ़ होना, कट जाना, चूंकि आप दुन्या में रहते हुए भी दुन्या से अलग थीं, कभी दुन्या में दिल न लगाया लिहाज़ा बतूल लक़ब हुवा। "ज़हरा" का मत़लब है : कली, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا "जन्नत की कली" थीं, आप के जिस्मे मुबारक से जन्नत की ख़ुश्बू आती थी, जिसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सूंघा करते थे, इस

लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का लक़ब "ज़हरा" हुवा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/452, 453 मुलख़्ख़सन)

बतूलो फ़ातिमा, ज़हरा लक़ब इस वासिते पाया

कि दुन्या में रहें और दें पता जन्नत की निगहत का

(दीवाने सालिक, स. 33)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ की अ़क़ीदत

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ एक बार ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के हां गए तो फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! **अल्लाह** की क़सम ! आप से बढ़ कर मैं ने किसी को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) नहीं देखा और ख़ुदा की क़सम ! आप के वालिदे मोह़तरम के बा'द लोगों में से कोई भी मुझे आप से बढ़ कर अ़ज़ीज़ व प्यारा नहीं। (مستدرک للحاکم، 4/139، حدیث:4789)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की शानो अ़ज़मत पर कई अह़ादीसे मुबारका मौजूद हैं, हुसूले बरकत के लिये चन्द पेश की जाती हैं :

"फ़ातिमा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ सय्यिदह से मह़ब्बत रखने वाले जहन्नम से आज़ाद हैं

"اِنَّمَا سُمِّیَتۡ فَاطِمَۃُ لِاَنَّ اللّٰہَ فَطَمَهَا وَمُحِبِّیۡهَا عَنِ النَّارِ" **तरजमा :** इस (या'नी मेरी बेटी) का नाम फ़ातिमा इस लिये रखा गया कि **अल्लाह** पाक ने इस को और इस के मुह़िब्बीन को दोज़ख़ से आज़ाद किया है। (کنز العمال، 12/50، حدیث:34222)

﴾2﴿ इन्सानी शक्ल में हूर

"मेरी बेटी फ़ातिमा इन्सानी शक्ल में हूरों की त़रह़ हैज़ो निफ़ास से पाक है।" (کنز العمال، 12/50، حدیث:34221)

﴾3﴿ जो इन्हें पसन्द वोह मुझे पसन्द

"फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) मेरे जिस्म का हिस्सा (टुकड़ा) है, जो इसे ना गवार वोह मुझे ना गवार, जो इसे पसन्द वोह मुझे पसन्द, रोज़े क़ियामत सिवाए मेरे नसब, मेरे सबब और मेरे इज़्दिवाजी रिश्तों के तमाम नसब मुन्क़त़ेअ़ (या'नी ख़त्म) हो जाएंगे।" (مستدرک للحاکم، 4/144، حدیث:4801)

﴾4﴿ ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की रिज़ा व नाराज़ी

"तुम्हारे (या'नी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के) ग़ज़ब से ग़ज़बे इलाही होता है और तुम्हारी रिज़ा से रिज़ाए इलाही।"

(مستدرک للحاکم، 4/137، حدیث:4783)

﴾5﴿ जन्नती औ़रतों की सरदार

"फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) मेरा टुकड़ा है, जिस ने इसे नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया।" और एक रिवायत में है : "इन की परेशानी मेरी परेशानी और इन की तक्लीफ़ मेरी तक्लीफ़ है।" (مشکاۃ المصابیح، 2/436، حدیث:6139)

सय्यिदह, ज़ाहिरा, त़य्यिबा, त़ाहिरा जाने अह़मद की राह़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ुश आमदीद मेरी बेटी !

नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी शहज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से बेह़द मह़ब्बत फ़रमाते थे, चुनान्चे ह़दीसे पाक

में है कि जब आप तशरीफ़ लातीं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप का ''مَرۡحَبًا بِابۡنَتِیۡ या'नी ख़ुश आमदीद मेरी बेटी !'' कह कर इस्तिक़्बाल फ़रमाते और अपने साथ बिठाते। (بخاری، 2/507، حدیث:3623)

शाने ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ब ज़बाने ह़ज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا

तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मैं ने चालढाल, शक्लो सूरत और बातचीत में बीबी फ़ातिमा से बढ़ कर किसी को हुज़ूरे अकरम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से मुशाबेह (या'नी मिलती जुलती) नहीं देखा और जब ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होतीं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हो जाते, उन के हाथ को पकड़ कर बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते और जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बीबी फ़ातिमा के पास तशरीफ़ ले जाते तो वोह (भी) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम के लिये खड़ी हो जातीं और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ को थाम कर चूमतीं और अपनी जगह बिठातीं। (ابوداؤد، 4/454، حدیث:5217) ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से सच्चा उन के वालिद के इलावा किसी और को नहीं देखा। (مسند ابی یعلیٰ، 4/192، حدیث:4681)

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा किया नज़्ज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का

(दीवाने सालिक, स. 33)

काश ! सय्यिदह ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मह़ब्बतो अ़क़ीदत का दम भरने वाले और वालियां भी सुन्नतों को अपना लें और अपना उठना बैठना, ओढ़ना बिछोना सुन्नत के मुत़ाबिक़ कर लें। ऐ काश !

सद करोड़ काश ! हम सब सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चलती फिरती तस्वीर बन जाएं ।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की इबादत

नवासए मुस्त़फ़ा, जिगर गोशए मुर्तज़ा, ला'ले फ़ातिमा ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी वालिदए मोह़तरमा ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को देखा कि रात को मस्जिदे बैत (या'नी घर में नमाज़ पढ़ने की मख़्सूस जगह) की मेह़राब में नमाज़ पढ़ती रहतीं यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हो जाता, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के लिये बहुत ज़ियादा दुआ़एं करतीं ।

(मदारिजुन्नुबुव्वत (मुतर्जम), 2/543)

जुमुआ़ के दिन अ़स्र के बा'द दुआ़

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا जुमुआ़ के दिन अ़स्र के बा'द ख़ुद ह़ुजरे में बैठतीं और अपनी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को बाहर खड़ा करतीं, जब सूरज डूबने लगता तो ख़ादिमा आप को ख़बर देतीं, उस की ख़बर पर सय्यिदह अपने हाथ दुआ़ के लिये उठातीं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/320)

दुआ़ क़बूल होती है

नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जुमुआ़ में एक ऐसी घड़ी है कि अगर कोई मुसल्मान उसे पा कर उस वक़्त **अल्लाह** पाक से कुछ मांगे तो **अल्लाह** पाक उस को ज़रूर देगा और वोह घड़ी मुख़्तसर है । (مسلم ص330، حدیث:1973)

साहिबे बहारे शरीअ़त का इर्शाद

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : क़बूलिय्यते दुआ़ की साआ़तों के बारे में दो क़ौल मज़बूत़ हैं : ﴿1﴾ इमाम के ख़ुत़्बे के लिये बैठने से ख़त्मे नमाज़ तक ﴿2﴾ जुमुआ़ की पिछली (या'नी आख़िरी) साआ़त। (बहारे शरीअ़त, 1/754, ह़िस्सा : 4)

शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की शादी ख़ाना आबादी

ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का बा बरकत निकाह़ 2 हिजरी सफ़र या रजब शरीफ़ या रमज़ानुल मुबारक में हुवा।

(اتحاف السائل للمناوی، ص33)

मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को घर तोह़फ़े में दे दिया

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ का घर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर मुबारक से दूर था, इस लिये सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मकाने आ़लीशान के क़रीब अपना एक घर ह़ज़रते अ़ली व फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के लिये पेश कर दिया। (طبقات لابن سعد، 8/19 ملخصًا)

जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की शादी का वक़्त आया तो तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा और ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने वादिये बत़्ह़ा से मिट्टी मंगवा कर उन के मकाने आ़लीशान के फ़र्श को लीपा फिर अपने हाथों से खजूर की छाल ठीक कर के दो गद्दे तय्यार किये, उन के खाने के लिये खजूर और किशमिश रखी और पीने के लिये ठन्डे पानी का एहतिमाम किया, फिर घर के एक कोने में लकड़ी का सुतून खड़ा कर दिया ताकि उस पर मश्कीज़ा और

कपड़े वग़ैरा लटका दिये जाएं, फिर फ़रमाया : हम ने फ़ातिमा की शादी से बेहतर कोई शादी नहीं देखी। (ابن ماجہ، 2/444، حدیث:1911 ملخصًا)

जहेज़ मुबारक

मालिके कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब अपनी प्यारी और लाडली शहज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का निकाह़ फ़रमाया तो बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ आप के मुबारक जहेज़ में एक चादर, खजूर की छाल से भरा हुवा एक तक्या, एक पियाला, दो मटके और आटा पीसने की दो चक्कियां थीं। (مسند امام احمد، 1/223، حدیث:819۔ معجم کبیر، 24/137، حدیث:365)

सय्यिदह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की मुबारक घरेलू ज़िन्दगी

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने फ़रमाया : घर के कामकाज (मसलन चक्की पीसने, झाड़ू देने और खाना पकाने के काम वग़ैरा) ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا करती थीं और बाहर के काम (मसलन बाज़ार से सौदा सलफ़ लाना, ऊंट को पानी पिलाना वग़ैरा) मैं करता। (مصنف ابن ابی شیبہ، 8/157، حدیث:14) ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا मेरे पास अपने हाथ से चक्की पीसती थीं जिस की वज्ह से हाथों में निशान पड़ जाते और ख़ुद पानी की मश्क भर कर लाती थीं और घर में झाड़ू वग़ैरा ख़ुद ही देती थीं। (ابوداؤد 4/410، حدیث:5063)

अल्लाह पाक की अ़त़ा से दोनों जहां के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी हो कर ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने निहायत सादगी के साथ ज़िन्दगी मुबारक गुज़ार कर दिखाई। आप के पास एक ही बिस्तर था और वोह भी मेंढे की एक खाल, जिसे रात को बिछा कर आराम किया जाता फिर सुब्ह़ को उसी खाल पर घास दाना डाल कर

ऊंट के लिये चारे का इन्तिज़ाम किया जाता और घर में कोई ख़ादिम भी न था। (طبقاتِ لابن سعد، 8/18)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सास और बहू

शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अपनी सास (या'नी मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ की वालिदा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) की अ़मली त़ौर पर ख़िदमत कर के आज कल की बहूओं को सास के साथ हुस्ने सुलूक करने की ख़ूब सूरत मिसाल अ़त़ा फ़रमाई है। मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ आप की दीगर ख़ूबियों के साथ इस (या'नी सास के साथ हुस्ने सुलूक) के भी मो'तरिफ़ (या'नी मानते) थे जैसा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने अपनी वालिदए मोह़तरमा से फ़रमाया : "फ़ातिमा ज़हरा आप को घर के कामों से बे परवा कर देंगी।" (الاصابۃ، 8/269 ملخصًا)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की मुबारक ज़िन्दगी बिल ख़ुसूस हमारी इस्लामी बहनों के लिये बड़ी क़ाबिले तक़्लीद (या'नी पैरवी के लाइक़) है, अगर ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के नक़्शे क़दम पर चलते हुए हमारी इस्लामी बहनें सादगी अपनाएंगी तो कम आमदनी में भी घर चल सकता है जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी शहज़ादी बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने कर के दिखाया है। ऐसे ही अगर बहू सास के साथ अपनी वालिदा की त़रह़ हुस्ने सुलूक करेगी, रिज़ाए इलाही के लिये उन के दुख सुख में हाथ बटाएगी तो घर अम्न का गहवारा बन सकता है बल्कि "बहू" सुसराल में "मलिका" बन कर रहेगी। अगर सय्यिदह

फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चलते हुए हमारी इस्लामी बहनें शरीअ़तो सुन्नत के मुताबिक़ सुन्नतों भरी, नेकियों भरी, इ़बादतो रियाज़त वाली ज़िन्दगी गुज़ारें और अपने बच्चों को भी इस के मुताबिक़ चलने की तरग़ीब दिलाती रहें तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم उन की गोद में पलने वाली औलाद भी सच्ची मुहि़ब्बे अहले बैत और ग़ुलामे ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا बनेगी। ऐ काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चलना नसीब हो जाए। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

چو زہرا باش از مخلوق رو پوش   کہ در آغوش شبّیرے بہ بینی

या'नी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की त़रह़ परहेज़ गार व पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में ह़ज़रते शब्बीर, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ जैसी औलाद देखो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की त़रफ़ से शादी के मौक़अ़ पर दुल्हन को दिये जाने वाले मक्तूब का कुछ हि़स्सा

अल्लाह पाक आप को दोनों जहां में शादो आबाद रखे, आप की ख़ुशियों को त़वील करे, **अल्लाह** पाक आप को मदीनए मुनव्वरह शरीफ़ के सदा बहार फूलों की त़रह़ हमेशा मुस्कुराती रखे, आप की बीमारियां, परेशानियां घरेलू ना चाक़ियां, तंगदस्तियां, क़र्ज़दारियां दूर हों, इज़्दिवाजी ज़िन्दगी ख़ुश गवार गुज़रे, औलादे सालिह़ा से गोद हरी रहे, बार बार ह़ज का शरफ़ मिले और मीठा मदीना देखना नसीब हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

येह पांच मदनी फूल अपने दिल के मदनी गुलदस्ते पर सजा लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم घर अम्न का गहवारा बन जाएगा : ﴿1﴾ सास और नन्द से किसी सूरत भी न बिगाड़िये, इन की ख़ूब ख़िदमत करती रहिये। अगर वोह त़न्ज़ करें तो ख़ामोश रहिये। ﴿2﴾ सास बिलफ़र्ज़ झिड़कियां दे तो अपनी मां का तसव्वुर कर लीजिये कि वोह डांट रही हैं तो सब्र आसान हो जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم ﴿3﴾ आप ने कभी सास के ग़ुस्सा हो जाने पर अगर जवाबी ग़ुस्से का मुज़ाहरा किया तो फिर "निभाव" मुश्किल तरीन है। ﴿4﴾ सुसराल की "बद सुलूकी" की फ़रियाद अपने मयके में करना सामने चल कर तबाही का इस्तिक़्बाल करना है। लिहाज़ा सब्र के साथ साथ इस उसूल पर कारबन्द रहिये कि "एक चुप सो (100) को हराए" जवाब में सिर्फ़ दुआए ख़ैर कीजिये। ﴿5﴾ उ़मूमन आज कल सुसराल की त़रफ़ से बहू पर "जादू करती है, अपने शौहर को क़ाबू कर लिया है" वग़ैरा वग़ैरा इल्ज़ाम लगाए जाते हैं, ख़ुदा न ख़्वास्ता आप के साथ ऐसा मुआ़मला हो जाए तो आपे से बाहर हो जाने के बजाए ह़िक्मते अ़मली और इन्तिहाई नरमी से काम लीजिये। अपना कमरा दिन के वक़्त बन्द न रखिये, घर के दूसरे अफ़राद की मौजूदगी में अपने शौहर से "कानाफूसी" न कीजिये। शौहर की मौजूदगी में भी चाय वग़ैरा अपनी सास या नन्द के साथ बैठ कर ही पियें। उन के सामने हरगिज़ मुंह न बिगाड़िये, ग़ुस्सा निकालने के लिये बरतन ज़ोर से न पछाड़िये। बच्चों को इस त़रह़ मत डांटिये कि उन को वस्वसा आए कि हमें सुनाती और कोसती है। धोने पकाने के काम में फुरती दिखाइये, मत़लब येह कि नजासत को नजासत से (या'नी इल्ज़ाम को हंगामे

से) पाक करने के बजाए (हिक्मत व हुस्ने अख़्लाक़ के) पानी ही से पाक किया जा सकता है। इस त़रह़ आप اِنۡ شَآءَ اللّٰہُ الۡکَرِیۡم अपने सुसराल की मन्ज़ूरे नज़र हो जाएंगी और ज़िन्दगी भी ख़ुश गवार हो जाएगी, सुसराल के ह़क़ में दुआ से ग़फ़्लत न कीजिये कि दुआ से बड़े बड़े मसाइल ह़ल हो जाते हैं। सौमो सलात की पाबन्दी करती रहिये, शर्ई पर्दे का एहतिमाम कीजिये। याद रहे ! देवर व जेठ से भी पर्दा है। अपने घर में "फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स जारी कीजिये। ख़ामोशी की आ़दत डालिये कि ज़ियादा बोलने से झगड़े का अन्देशा बढ़ जाता है। फ़ेशन परस्ती के बजाए सुन्नतों का रास्ता इख़्तियार कीजिये कि इसी में भलाई है। मुझ गुनहगार को दुआए ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत से नवाज़ती रहें। अगर आप को मेरा येह मक्तूब पसन्द आए तो इसे प्लास्टिक कोटिंग करवा लीजिये और ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी घरेलू झगड़ा हो तो इस को पढ़ लीजिये। وَالسَّلَام مَعَ الۡاِکۡرَام

(सुन्नते निकाह़, स. 58 ब तग़य्युर)

मदनी बेटी का ख़ुदाया घर सदा आबाद रख फ़ातिमा ज़हरा का सदक़ा दो जहां में शाद रख

(वसाइले बख़्शिश, स. 680)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की औलादे पाक

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के तीन शहज़ादे : ﴿1﴾ ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ, ﴿2﴾ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ और ﴿3﴾ ह़ज़रते मुह़स्सिन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ और तीन शहज़ादियां : ﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदह बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, ﴿2﴾ ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا और ﴿3﴾ ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا थीं। (शाने ख़ातूने जन्नत, स. 256 ता

263 मुलख़्ख़सन) (इज्माल तरजमा इक्माल, स. 72) ह़ज़रते मुह़स्सिन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ और शहज़ादी ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का इन्ति़काल शरीफ़ तो बचपन ही में हो गया था इस लिये तारीख़ो सीरत की किताबों में इन का तज़्किरा शरीफ़ कम मिलता है।

शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के घर आमदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र का इरादा फ़रमाते तो सब से आख़िर में ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मुलाक़ात फ़रमाते और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मुलाक़ात फ़रमाते। (مستدرک للحاکم، 4/141، حدیث:4792)

बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के लिये दुआए रह़मत

नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाते और रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मकान पर से गुज़रते और घर से चक्की के चलने की आवाज़ सुनते तो बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ करते : या अर्ह़मर्राह़िमीन ! फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) को रियाज़तो क़नाअ़त की जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमा और इसे ह़ालते फ़क़्र में साबित क़दम रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। (सफ़ीनए नूह़, ह़िस्सए दुवुम, स. 35)

मह़ब्बत भरा मन्ज़र और मह़ब्बतों भरा जवाब

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने एक मरतबा बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

आप को वोह (ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) मुझ से ज़ियादा प्यारी हैं या मैं ? तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बड़ा ही ख़ूब सूरत जवाब इर्शाद फ़रमाया : वोह मुझे तुम से ज़ियादा और तुम उस से ज़ियादा प्यारे हो।

(مسند حمیدی، 1/22، حدیث:38)

ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की सच्चाई

ऐ आशिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا और तमाम उम्महातुल मुअमिनीन (या'नी प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाक बीवियां जो तमाम मुसल्मानों की माएं हैं) एक दूसरे से मह़ब्बत फ़रमाती थीं जैसा कि एक वाक़िआ़ है : ह़ज़रते जुमैअ़ बिन उ़मैर तैमी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं अपनी फूफी के साथ ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन से अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन ज़ियादा मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) था ? फ़रमाया : फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, फिर अ़र्ज़ की गई : मर्दों में से ? फ़रमाया : उन के शौहर, जहां तक मुझे मा'लूम है वोह बहुत रोज़े रखने वाले और कसरत से क़ियाम करने वाले हैं। (ترمذی، 5/468، حدیث:3900)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ सच्चे मुह़िब्बे अहले बैत और आ़शिक़े सह़ाबा थे, आप ने अपनी कई तह़रीरात में ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की शानो अ़ज़मत बयान की है बल्कि आप ने सय्यिदह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की मनाक़िब भी लिखी हैं। शायद इन्ही बरकतों का नतीजा था कि ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की और मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की तारीख़े विसाल एक ही

(या'नी 3 रमज़ानुल मुबारक) है। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ तिरमिज़ी शरीफ़ की बयान की गई ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : येह है ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की ह़क़गोई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने येह न फ़रमाया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा प्यारी "मैं" थी और मेरे बा'द मेरे वालिद बल्कि जो आप के इ़ल्म में ह़क़ था वोह साफ़ साफ़ कह दिया, अगर येह ही सुवाल ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से होता तो आप फ़रमातीं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़ियादा प्यारी जनाबे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا थीं फिर उन के वालिद। मा'लूम हुवा कि उन के दिल बिल्कुल पाको साफ़ थे। अफ़्सोस उन पर जो इन ह़ज़रात को एक दूसरे का दुश्मन कहते हैं। ख़याल रहे कि मह़ब्बत बहुत क़िस्म की है और मह़बूबिय्यत की नौ़इय्यतें मुख़्तलिफ़ हैं, औलाद में सब से ज़ियादा प्यारी जनाबे फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا हैं, भाइयों में सब से ज़ियादा प्यारे अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ हैं और अज़्वाजे पाक में बहुत प्यारी जनाबे आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/469)

उस मुबारक मां पे सदक़े क्यूं न हों सब अहले दीं
जो हो उम्मुल मुअमिनीं बिन्ते अमीरुल मुअमिनीं
क्या मुबारक नाम है और कैसा प्यारा है लक़ब
आ़इशा मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़लमीं

(दीवाने सालिक, स. 83)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से महब्बत का हुक्म

नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन ख़ातूने जन्नत हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! क्या तुम उस से महब्बत नहीं करोगी जिस से मैं महब्बत करता हूं ? आप ने जवाबन अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं । तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तो इस (या'नी हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) से महब्बत करो । (مسلم، ص1017، حدیث6290)

आयए तत्हीर में है इन की पाकी का बयां हैं येह बीबी ताहिरा शौहर इमामुत्ताहिरीं

तस्बीहे फ़ातिमा

ख़ातूने जन्नत हज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के मुबारक हाथों पर चक्की (पर आटा पीसने) की वज्ह से छाले पड़ गए थे जो कि दर्द का बाइस बनते थे, एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ख़ादिम लेने की ख़ातिर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं मगर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात न हो सकी, अलबत्ता हज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मुलाक़ात हो गई और उन्हें अपना मक़्सद बताया, जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर तशरीफ़ लाए तो हज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के आने की ख़बर दी । हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी लख़्ते जिगर के हां तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं जो तुम्हारे सुवाल से बेहतर हो ! जब तुम सोने के लिये लैटो तो 33 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰہ, 33 मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और 34 मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَر कह लिया करो, येह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है ।

(بخاری، 2/536، حدیث:3705 مفہوماً)

ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद ऐनी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : या तो **अल्लाह** पाक इस तस्बीह़ पढ़ने वाले को ऐसी क़ुव्वत अ़ता फ़रमा देता है जिस के बा'द उस के लिये मुश्किल काम आसान हो जाते हैं और उसे ख़ादिम की ज़रूरत नहीं रहती या फिर उस तस्बीह़ का उख़्वी सवाब दुन्या में ख़ादिम की ख़िदमत के नफ़्अ़ से ज़ियादा बेहतर है।

(عمدۃ القاری، 14/374، تحت الحدیث: 5361 ملخصًا)

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं ने येह वज़ीफ़ा कभी भी नहीं छोड़ा।" (سنن الکبری للنسائی، 6/204، حدیث: 10652) येह "तस्बीहे़ फ़ातिमा" कहलाती है और सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में इस पर अ़मल की ख़ास तरग़ीब दिलाई जाती है, हमें भी अपनी ज़िन्दगी में कुछ न कुछ अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बनाना चाहिये कि येह रूह़ानी व जिस्मानी ए'तिबार से बहुत फ़ाएदे मन्द है।

पर्दे की अ़लामत

सय्यिदह ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के पर्दे की भी क्या बात है बल्कि आप ऐसी अ़ज़मतो शान वाली हैं कि आप की मुबारक ज़ात, आप का मुबारक नाम ह़या और पर्दे की अ़लामत बन गया है। बड़े बड़े उ़लमाओ मशाइख़ (کَثَّرَھُمُ اللّٰہ या'नी **अल्लाह** पाक इन की ता'दाद और बढ़ाए) जब पर्दे के बारे में दुआ़ करते हैं तो यूं अ़र्ज़ करते हैं : **या अल्लाह** पाक! हमारी बहू बेटियों को "सय्यिदह ज़हरा" के पर्दे का सदक़ा नसीब फ़रमा।

औरत के लिये भलाई

ख़ादिमे नबी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि "औरतों के लिये किस चीज़ में भलाई है ?" सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان फ़रमाते हैं : "हम नहीं जानते थे कि हम क्या जवाब दें।" ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के पास तशरीफ़ ले गए और उन्हें इस के बारे में बताया तो उन्हों ने फ़रमाया : "आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह क्यूं न अ़र्ज़ की, कि औरतों के लिये भलाई इस में है कि वोह (ग़ैर मह़रम) मर्दों को न देखें और न ही (ग़ैर मह़रम) मर्द इन्हें देखें।" तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर येह बात बताई, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "येह बात तुम्हें किस ने बताई ?" अ़र्ज़ की : "फ़ातिमा ने।" तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फ़ातिमा मेरे जिगर का टुकड़ा है।" (حلیۃ الاولیاء، 2/50، رقم:1444۔ موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 8/97، حدیث:412)

जनाज़े पर पर्दे का एहतिमाम

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने वफ़ात के वक़्त वसिय्यत फ़रमाई थी कि जब मैं दुन्या से रुख़्सत हो जाऊं तो मुझे रात में दफ़्न किया जाए ताकि किसी ग़ैर मर्द की नज़र मेरे जनाज़े पर भी न पड़े।"

(مدارج النبوۃ، 2/461)

सय्यिदए काएनात, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को येह तश्वीश थी कि ज़िन्दगी में तो ग़ैर मर्दों से ख़ुद को बचाए

रखा है, अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी मय्यित पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते बीबी अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : मैं ने ह़बशा में देखा है कि जनाज़े पर दरख़्त की शाख़ें बांध कर एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं। फिर उन्हों ने खजूर की शाख़ें मंगवा कर उन्हें जोड़ा फिर उस पर कपड़ा तान कर सय्यिदह ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को दिखाया जिस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا बहुत ख़ुश हुईं। (جذب القلوب، ص159 ملخصًا)

इस्लाम में पहली ख़ातून

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : इस्लाम में सय्यिदह, त़य्यिबा, त़ाहिरा ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا "पहली ख़ातून" हैं जिन की मय्यित मुबारक को इस त़रह़ छुपाने का एहतिमाम किया गया था। (سیر اعلام النبلاء، 3/431)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि (रोज़े क़ियामत) अज़्वाजे पाक और फ़ातिमा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) बा पर्दा उठेंगी कि वोह ख़ास औलियाउल्लाह में दाख़िल हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/369 मुल्तक़त़न) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ इस्लामी बहनों को समझाते हुए लिखते हैं :

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
अपने देवर जेठ से पर्दा करो इन से हरगिज़ बे तकल्लुफ़ मत बनो

(वसाइले बख़्शिश, स. 714)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ग़मे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बेह़द मह़ब्बत फ़रमाती थीं इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल शरीफ़ का आप को बेह़द सदमा हुवा जिस का इज़्हार आप यूं फ़रमातीं : (हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल शरीफ़ पर) जो सदमा मुझे पहुंचा है अगर वोह सदमा ''दिनों'' पर आता तो वोह ''रातें'' हो जातीं। (مرقاۃ المفاتیح، 10/305، تحت الحدیث:5961)

इन्तिक़ाल शरीफ़ और ग़ुस्ल शरीफ़

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल शरीफ़ के 6 माह बा'द 3 रमज़ानुल मुबारक सिन 11 हिजरी मंगल की रात सय्यिदह, त़य्यिबा, त़ाहिरा ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का 28 साल की उ़म्र में इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा। ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को ग़ुस्ल देने में मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते बीबी अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا भी शामिल थीं और इन्हें ग़ुस्ल देने की वसिय्यत ख़ुद सय्यिदह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने की थी।

(سنن کبریٰ للبیہقی، 4/56، حدیث:6930)

नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन

ह़ज़रते सय्यिदह ख़ातूने जन्नत बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का जनाज़ा किस ने पढ़ाया, इस बारे में रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं, एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने और एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते

अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने पढ़ाया, जब कि कसीर रिवायात में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का जनाज़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने पढ़ाया।

(سنن کبریٰ للبیہقی، 4/46، حدیث:6896)

मज़ारे बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के बारे में दो रिवायात

इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ लिखते हैं : ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मज़ार शरीफ़ के बारे में दो रिवायतें हैं : ﴿1﴾ बक़ीअ़ शरीफ़ में ﴿2﴾ ख़ास रौज़ए अक़्दस के साथ (प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ार शरीफ़ के साथ)।

एक आ़शिक़े रसूल ने मदीनए त़य्यिबा के एक आ़लिम साह़िब से अ़र्ज़ की : मैं दोनों जगह ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करता हूं, "अन्वार" पाता हूं। उन्हों ने फ़रमाया : येह करीम ज़ातें जगह की पाबन्द नहीं, तुम्हारी तवज्जोह होनी चाहिये फिर नूरबारी उन का काम है।

(फ़तावा रज़विय्या, 26/432)

पुल सिरात़ पर ए'लान

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जब क़ियामत का दिन होगा तो एक ए'लान करने वाला ए'लान करेगा : ऐ अहले मज्मअ़ ! अपनी निगाहें झुका लो ! ताकि ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) पुल सिरात़ से गुज़रें।"

(جامع صغیر، 1/945، حدیث:228)

बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ क़ियामत के दिन नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ऊंटनी जिस का नाम "अ़ज़्बा" है, ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا मैदाने मह़शर में उस पर सुवार हो कर तशरीफ़ लाएंगी।

अल्लाह पाक की ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। (سبل الہدیٰ والرشاد، 11/63)

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आबे तह़्क़ीर से जिस में पौदे जमे उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

10 बीबियों की कहानी

अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "10 बीबियों की कहानी, शहज़ादे का सर और जनाबे सय्यिदह की कहानी" येह सब मन घड़त हैं, इन की कोई शर्ई़ ह़ैसिय्यत नहीं है, इन का पढ़ना और इन की मन्नत मानना ना जाइज़ है। अगर कुछ पढ़ना है तो यासीन शरीफ़ पढ़ ली जाए, इस में भी उतना ही वक़्त लगेगा जो इन कहानियों में लगता है बल्कि इस से भी कम वक़्त लगेगा, फिर इस की बरकतें भी हैं और फ़ज़ाइल भी। ह़दीसे पाक में है कि एक बार यासीन शरीफ़ पढ़ने पर 10 क़ुरआने पाक का सवाब मिलता है। (ترمذی، 4/406، حدیث:2896) मा'लूमात की कमी की वज्ह से इन कहानियों का रवाज पड़ा है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/272)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला